www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

मूल्यवान जीवन

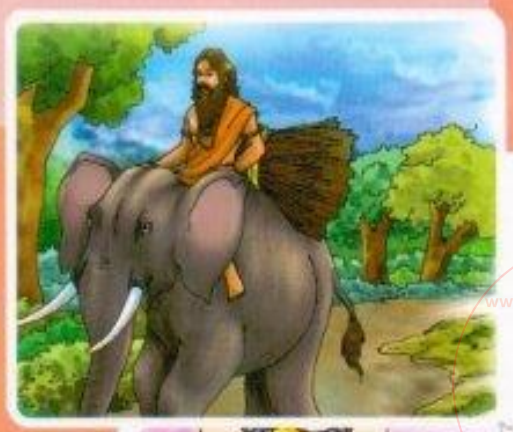

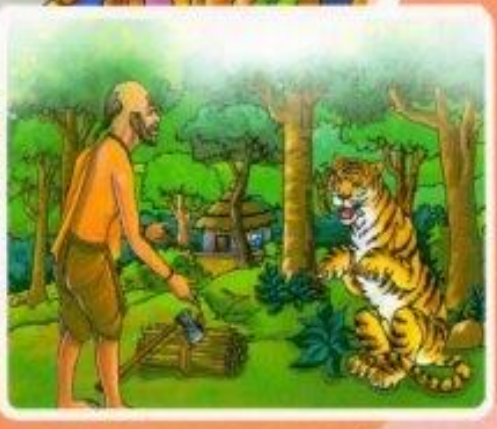

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

3

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वृक्ष काटना महापाप

विश्वजित नाम के राजा ने देखा कि एक व्यक्ति हरा-भरा पेड़ काट रहा है। उस व्यक्ति से पूछा—''तुम यह पेड़ क्यों काट रहे हो ?''

''इसे मैं आग जलाने के लिए काट रहा हूँ'' वह व्यक्ति बोला।

राजा ने उसे समझाया—''सूखे, ठूँठ पेड़ों को काटो। हमारे राज्य में हरे-भरे, फल-फूलदार वृक्ष काटना अपराध है।''

राजा आगे कहने लगा—''पेड़ हमारे लिए बहुत ही उपयोगी होते हैं। यह हमें फल-फूल और छाया देते हैं। ये वर्षा में हमारी सहायता करते हैं। पक्षी इन पर बसेरा करते हैं। इनके नीचे राहगीर और पशु सुस्ताते हैं। इनका पूरा का पूरा जीवन दूसरों की भलाई के लिए होता है। पेड़ों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। हमारे जीवन की ही भाँति पेड़ों का जीवन भी मूल्यवान होता है।''

राजा के पीठ फिरते ही उसने फिर कुल्हाड़ी चलानी शुरू कर दी। तभी राजा के सैनिक आए। वे राजा से थोड़ा पीछे छूट गए थे। उन्होंने उसे पकड़ लिया और राजा से दंड दिलवाने के लिए ले चले। सैनिकों ने कहा—''पेड़ काटना अपराध ही नहीं महापाप है।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कलि का साम्राज्य कैसे बढ़ा ?

एक बार की बात है कि सतयुग धरती की ओर बढ़ रहा था। यह देखकर कलियुग ने अपने सहायकों की सभा बुलायी। किसी ने कहा—''मैं पृथ्वी पर जाकर धन का लालच फैला दूँगा।'' किसी ने कहा—''हम लोगों को कामनाओं में फँसा देंगे।'' किसी ने कामिनी का दर्प दिखाया, पर कलि को संतोष न हुआ। एक बुड्ढा सहायक एक कोने में बैठा था। वह बोला—''मैं जाकर लोगों में निराशा और आलस पैदा कर दूँगा। उनके साहस को नष्ट कर दूँगा, बस फिर वे किसी काम के न रहेंगे और न वे किसी बुराई को दूर करने के लिए संघर्ष कर सकेंगे और किसी अच्छाई को उपार्जित करने का साहस उनमें न रहेगा।'' इस वृद्ध सहायक की बात कलि महाराज को बहुत पसंद आई और उसे अपना प्रधानमंत्री बना दिया।

आज के निराश और आलसी लोग कलि महाराज की प्रजा इसी प्रकार बने हुए हैं। इन परिस्थितियों में बेचारा सतयुग ठहरता ही कहाँ!

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कला कैसे निखरेगी ?

फ्रांस का प्रसिद्ध मूर्तिकार आगस्टस सेंट गाडेंस जब पेरिस में मूर्तिकला का विद्यार्थी था, उसके पास एक संभ्रांत महिला अपनी एक मूर्ति बनवाने आई। उसने अपने कलागृह में उसकी मूर्ति बनाना आरंभ किया। जब मूर्ति बन चुकी, तो वह महिला उस मूर्ति को देखने आई। उसे वह मूर्ति पसंद नहीं आई। गाडेंस ने उसे फिर बनाया, फिर भी उसे पसंद नहीं आई। इस प्रकार कितनी ही बार उसकी यह मूर्ति नापसंद कर दी गई। नापसंद किए जाने पर दोगुने उत्साह से उसे सँवारने में लग जाया करता था। एक दिन उसके मित्रों ने उससे उसके इस उत्साह का कारण पूछा, तो उसने बताया कि इसी प्रकार तो मेरी कला निखरेगी। इसी उत्साह तथा लगन के परिणामस्वरूप ही वह प्रसिद्ध मूर्तिकार बन सका था।

निरंतर, हर पल जो सीखने को, स्वयं को प्रखर बनाने को उद्यत हो, वही विद्या का धनी बनता, श्रेय सम्मान पाता व श्रेष्ठता के शिखर पर पहुँचता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हाथी की समझदारी

एक बहुत बलवान और सुंदर हाथी वन में रहता था। वह वहाँ रहने वाले योगी पुरुषों की अपनी इच्छा से सेवा-सहायता करता रहता था। योगी प्रसन्न होकर हाथी से वरदान माँगने को कहने लगा। हाथी ने सकुचाते हुए कहा—''गुरुदेव, आप प्रसन्न हैं तो मुझे मनुष्य जैसी बुद्धि दे दीजिए।''

महात्मा जी ने उसे वैसा ही वरदान दे दिया और साथ ही उसका नाम वामदेव रख दिया। वामदेव वेद-शास्त्रों का पंडित हो गया। महात्मा जी के यहाँ जब विद्वानों की मंडली जमा होती, तब वह भी उसमें सम्मिलित हो जाता। उपस्थित जनों में से जब कोई गलत बात कहता, उसी पर झुँझलाता, पर वाणी न होने से कुछ कह न सकता था।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मनुष्य जैसी बुद्धि मिल जाने से उसे अपने संबंध में और भी बहुत सी बातें सूझने लगीं। सभ्यजनों जैसे कपड़े पहनने चाहिए। पर उसके लिए धोती, कुर्ता, पगड़ी, टोपी कौन लाता? अब उसे नंगा फिरने, जहाँ-तहाँ लीद करने में भी शरम आने लगी, पर वह करता क्या? कहता किससे ? लाता कहाँ से? कुढ़न और भी दूनी हो गई। एक दिन वह मनुष्यों का व्यवहार देखने निकल पड़ा। वे कुरसियों पर बैठे थे। प्याले से चाय पी रहे थे। सिनेमा देख रहे थे। वामदेव को भी वैसी इच्छा उठने लगी। पर बेचारे को साधन मिलते कहाँ से? कुढ़न जैसे-जैसे बढ़ती गई, वैसे-वैसे वह और भी दुर्बल होता चला गया। योगी ने वामदेव से पूछा—"वत्स, तुम्हारा मनचाहा वरदान मिल गया। अब क्या कष्ट है जो दिन-दिन दुबले होते जाते हो?"

हाथी ने सूँड़ से स्वामी जी का चरण पकड़ते हुए कहा—"आपने जो वरदान दिया है, उसे वापस ले लीजिए।" उनने वैसा ही किया। अब हाथी पहले जैसा मस्त था।

हाथी की समझ में यह बात अच्छी तरह से आ गई थी कि ईश्वर ने जिसे जैसा शरीर दिया है, बुद्धि भी उसी के अनुरूप होनी उचित है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विवेक बुद्धि से काम करें

एक बार किसी कार्य से लोकमान्य तिलक को विदेश जाने की आवश्यकता पड़ी। समुद्र यात्रा उन दिनों धर्म के विरुद्ध मानी जाती थी। लोकमान्य ने विचार किया कि संभव है पंडित लोग इसकी कुछ व्यवस्था कर दें। यह सोचकर वे काशी के प्रमुख महामहोपाध्याय से मिले कि कोई उपाय बताइए। पंडित जी ने कहा—"काम तो कठिन है पर यदि पाँच हजार रुपये दें तो व्यवस्था हो सकती है।" लोकमान्य को अधर्म के बदले धर्म को खरीदना ठीक नहीं लगा। उन्होंने बिना किसी व्यवस्था के ही यात्रा की और अपने साथियों से कहा—"दूसरों की समझ या व्यवस्था की परवाह न करके हमें अपनी स्वतंत्र विवेक-बुद्धि का सम्मान करना चाहिए। विद्वानों को ऐसे पाखंड की बातों की परवाह न करके ज्ञानवृद्धि के लिए अवश्य विदेश जाना चाहिए।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक व्यक्ति अनेक भाव

विवेकानंद जी से एक वेदांती ने पूछा—"एक ही परमात्मा को अनेक नाम-रूपों से संबोधित करने में क्या मन में भ्रम नहीं होता?"

स्वामी जी बोले—"भाई जी! आप एक ही व्यक्ति हैं। आपकी माँ आपको बेटा कहती है उसी भाव से देखती है। पत्नी का भाव दूसरा है। पुत्र, पिता, मित्र अलग-अलग भाव से देखते हैं। आपके अनुयायी कोई आपको विद्वान, कोई धर्मप्रचारक तो दूसरे ढोंगी के भाव से देखते हैं। जब शरीरधारी मनुष्य के प्रति इतने संबोधन और भाव सही हो सकते हैं तो चेतनारूप परमात्मा के अनेक नाम-रूपों में क्यों भ्रम दिखाई देता है?"

अत: भगवान के भी इसी प्रकार कई नाम हो सकते हैं। भगवान तो एक ही है परंतु कई नाम से पुकारा जाता है।

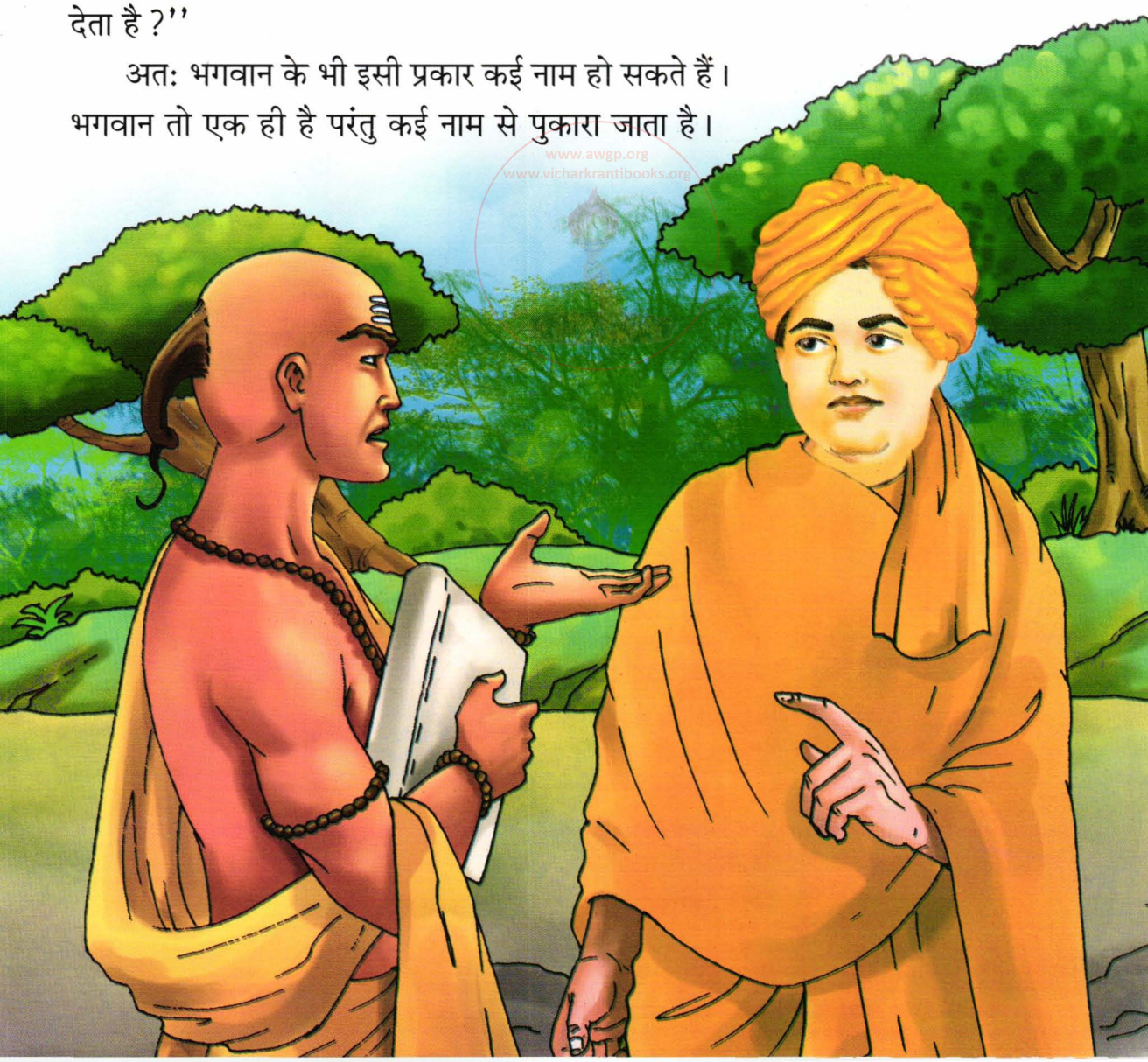

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

हेनरी फोर्ड की लगन

महापुरुषों का यह गुण होता है कि छोटे से घर में जन्म लेकर यदि बहुत संपन्न व्यक्ति भी बन जाएँ फिर भी वे कभी बदलते नहीं। हेनरी फोर्ड अमेरिका के एक छोटे से ग्राम ग्रीन फील्ड में जन्मे। घर की आर्थिक स्थिति खराब होने से उन्हें बारह वर्ष की आयु से ही नौकरी और रात में पढ़ाई करनी पड़ी। खाली समय में भी वे कुछ न कुछ सार्थक चिंतन करते रहते। उनके मस्तिष्क में मशीनों का बनाना, सुधारना आदि के विचार चलते रहते। उनके साथ के दूसरे गरीब लड़के खाली समय में आवारागरदी करते, समय खराब करते।

जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल ही आती है। लगन की प्रचंड शक्ति ने हेनरी को स्वावलंबी, इंजीनियर एवं मैकेनिक बना दिया। उसने कई तरह की मशीनों को

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बनाया और सुधारा। लगन उसे इस दिशा में और भी कुशल बनाती रही। फोर्ड ने मोटर बनाने का नया कार्य हाथ में लिया और वह बिगड़ते-सुधरते सफलता के स्तर तक पहुँच गया। उसने जलयान भी बनाए।

अमेरिका में हेनरी फोर्ड का कारखाना प्रथम श्रेणी का है। उसमें ५० हजार व्यक्ति काम करते हैं और हर मिनट में एक मोटर तैयार होती है। श्रमिकों की सुविधा का उसने पूरा ध्यान रखा है। साथ ही जो कमाया उसका अधिकांश भाग जन—कल्याण के कार्यों के लिए दान किया। उसके दान में किसी देश-जाति का कोई भेदभाव नहीं रखा गया। अब तक वे अरबों-खरबों दान कर चुके हैं। फोर्ड फाउंडेशन द्वारा अनेक परमार्थ-कार्य चलते हैं।

मनुष्य का ऐसा जीवन धन्य है जो स्वयं प्रकाशित हो और दूसरों को भी प्रकाशित करे।

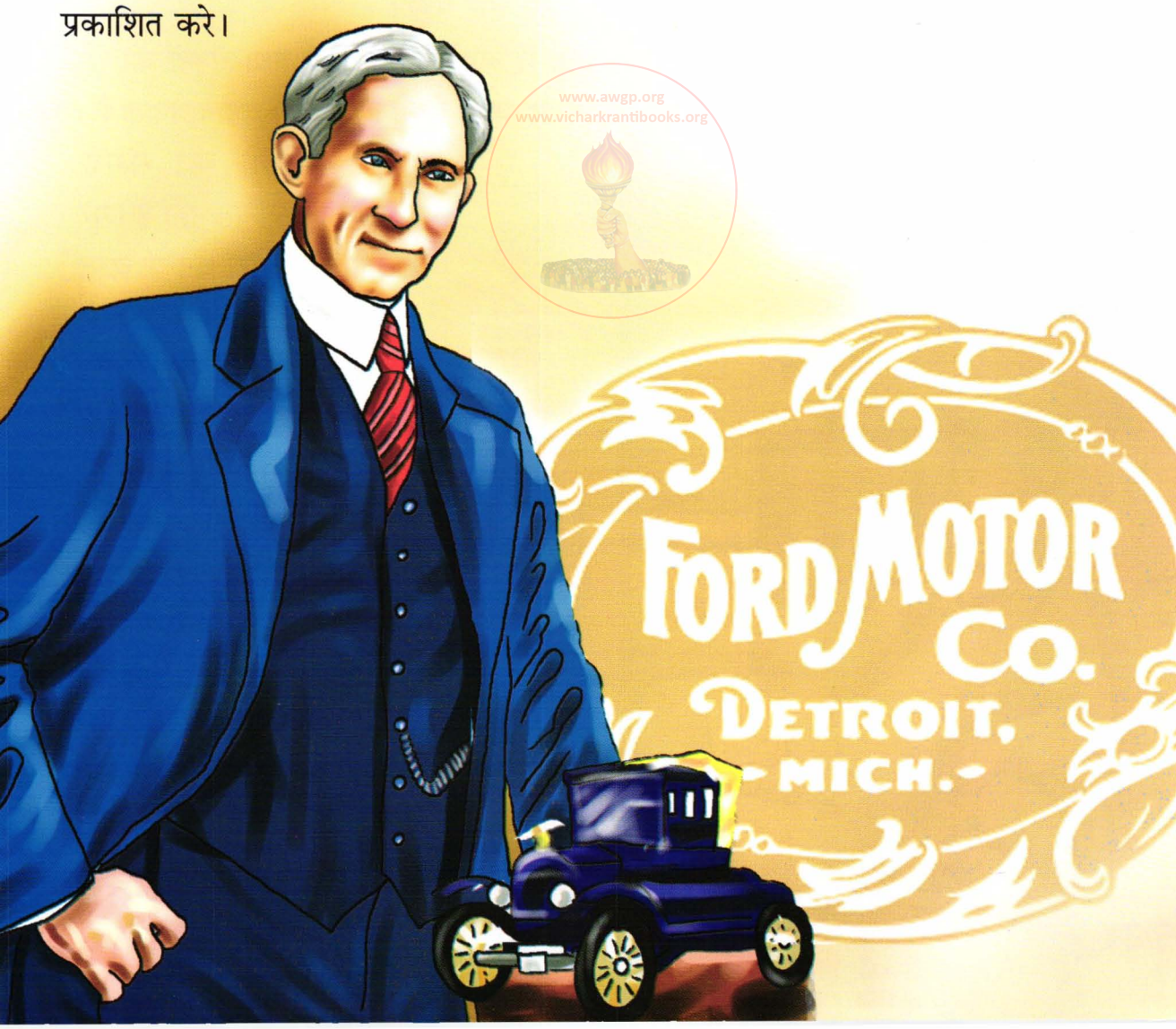

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मित्र का कर्त्तव्य

छोटी सोच बुद्धि को भ्रष्ट कर देती है एवं चिंतन को छोटा बना देती है। दो बचपन के मित्रों में से एक धनी हो गया और दूसरा निर्धन ही रहा। निर्धन ने बचपन की मित्रता को याद करके धनी मित्र से मिलने की बात सोची, ताकि कमाने खाने का कोई साधन मिल सके।

मित्र के पास पहुँचा तो धनी ने निर्धन को पहचानते हुए भी बला टालने के लिए अनजान की तरह पूछा—"तुम कौन हो? कहाँ से, किसलिए आए हो?"

निर्धन मित्र थोड़ी ही देर में सब समझ गया और बोला—"मैंने सुना था कि बचपन का मेरा घनिष्ठ मित्र अंधा हो गया है, तो सहानुभूतिवश देखने चला आया।" और उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही वापस घर लौट पड़ा।

व्यक्ति शरीरसंपदा और धनसंपदा के अहं में अपने हितैषी मित्र तथा अपनों को भी भुला बैठता है। वह अपने कर्त्तव्य धर्म का निर्वाह करने में अनजान जैसे बहाने बनाता है।

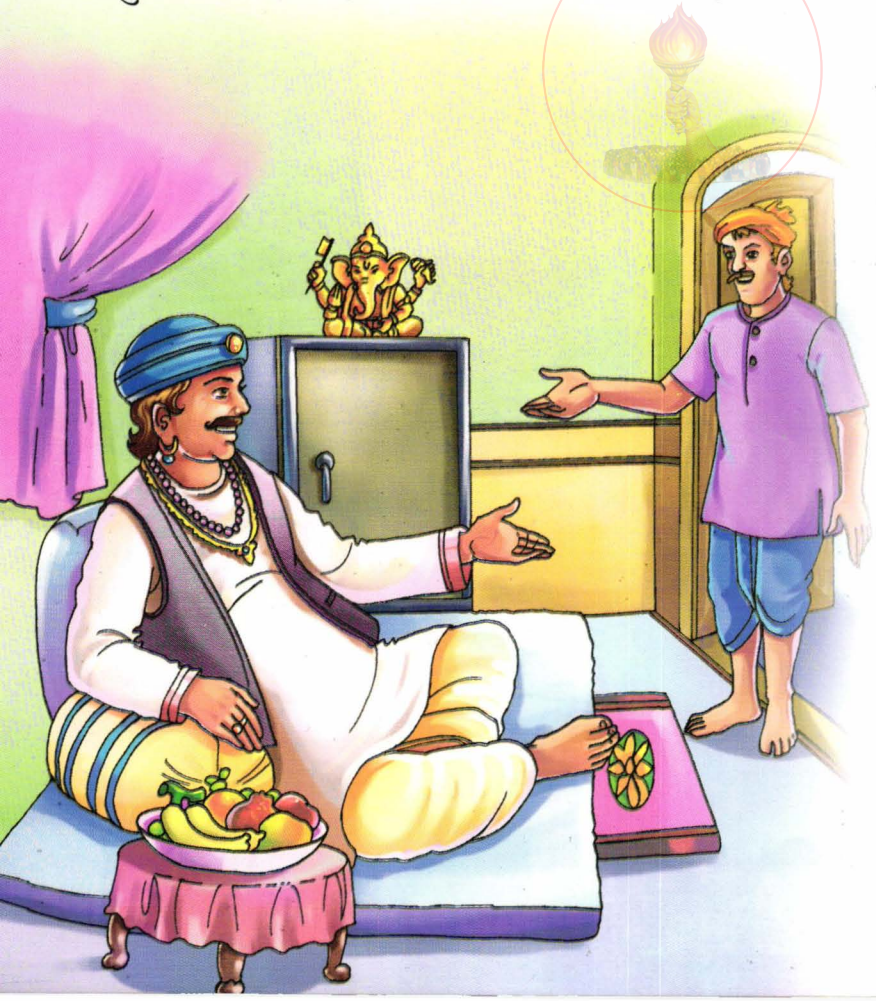

साधनों का संग्रह करना अनुचित नहीं है। पर जो मिले, उस धन या वस्तु को अपना व्यक्तिगत न मानें, समाज का मानें। एक-एक पाई समाज के हित में लगाएँ। मनुष्य होने के नाते उसका कर्त्तव्य है कि वह मित्रता का निर्वाह करे और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों की सेवा-सहायता करे।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जयप्रकाश—लोकनायक

महान बनने के लिए अपने अंदर धीरे-धीरे गुणों का विकास करते रहना चाहिए। जयप्रकाश नारायण अमेरिका पढ़ने गए, पर पैसे का प्रबंध न था। उन्होंने फल और होटल वाले के यहाँ नौकरी की और शेष समय में पढ़ाई जारी रखी। कई मित्रों ने सहायता देनी चाही; पर उन्होंने स्वावलंबन ही स्वीकार कर छोटी नौकरी करते हुए पढ़ाई जारी रखी।

इन्हीं गुणों के कारण वे एक दिन लोकनायक कहलाए।

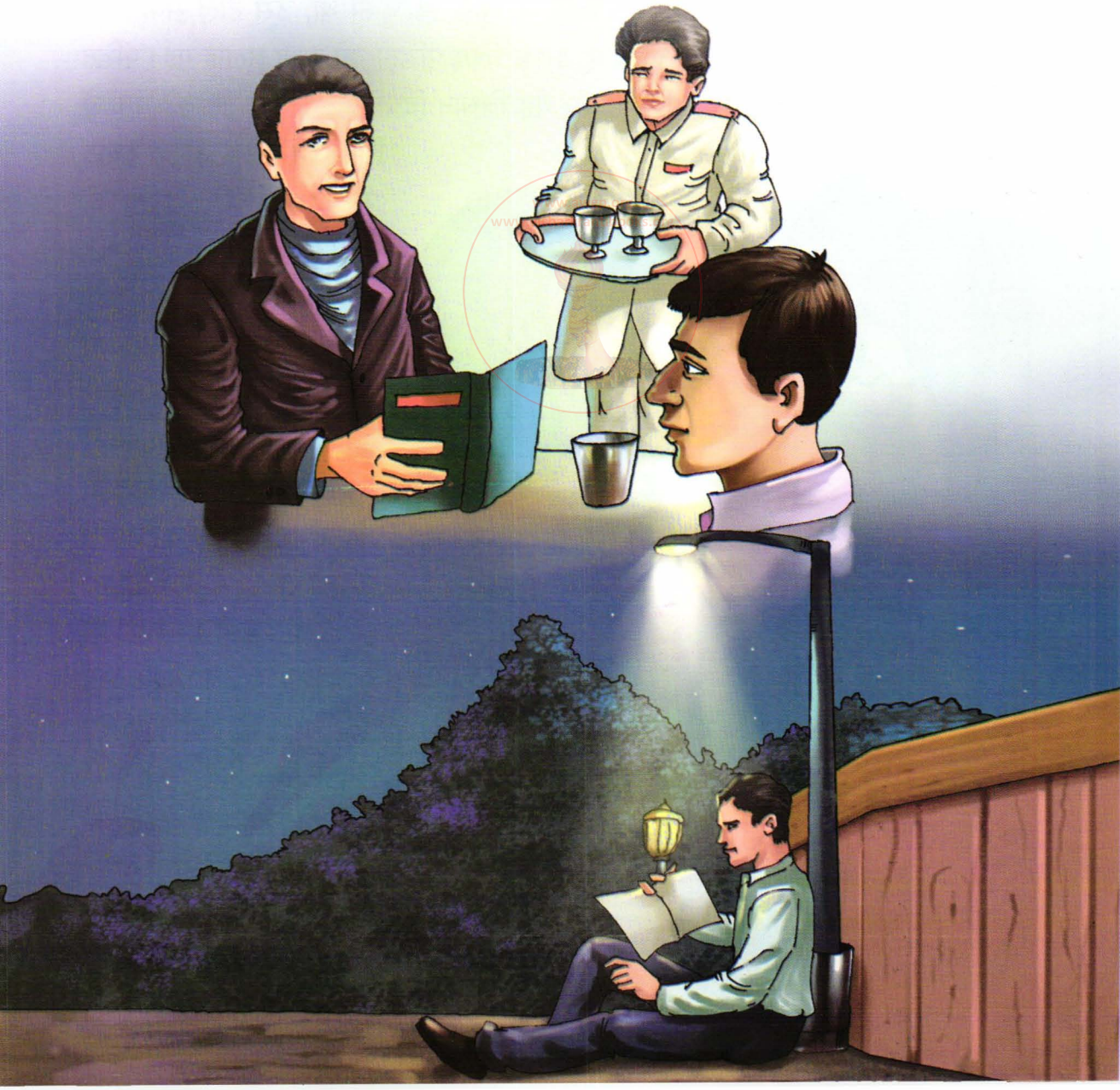

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

भावना सर्वोपरि है

कल जन्माष्टमी का उत्सव था। आज राधा-गोविंद जी के मंदिर में नंदोत्सव है। दोपहर के भोग के पश्चात गोविंद जी के विग्रह को शयन के लिए भीतरी प्रकोष्ठ में ले जाते समय पूजक क्षेत्रनाथ का पाँव फिसल जाने से रंग में भंग हो गया। वह मूर्ति सहित फर्श पर जा गिरे, जिससे मूर्ति का एक पाँव टूट गया। भय और आशंका के मेघ मँडराने लगे। मंदिर में बड़ा कोलाहल मच उठा। अपने-अपने मन से सभी भावी अमंगल की सूचना दे रहे थे। सबके चेहरों पर भय की रेखाएँ खिंच गईं। रानी रासमणी ने सुना तो वह एकदम सिहर उठीं—अब क्या होगा? किंतु जो कुछ हो चुका था, उसे टाल सकने की सामर्थ्य किसमें थी। अब क्या किया जाए, इसके लिए पंडितों की सभा बुलाई गई। पंडित लोगों ने ग्रंथ देखे, सोच-विचार किया और यह विधान दिया—"भग्न विग्रह को गंगा में विसर्जित करके उसके स्थान पर नई मूर्ति की स्थापना की जाए।"

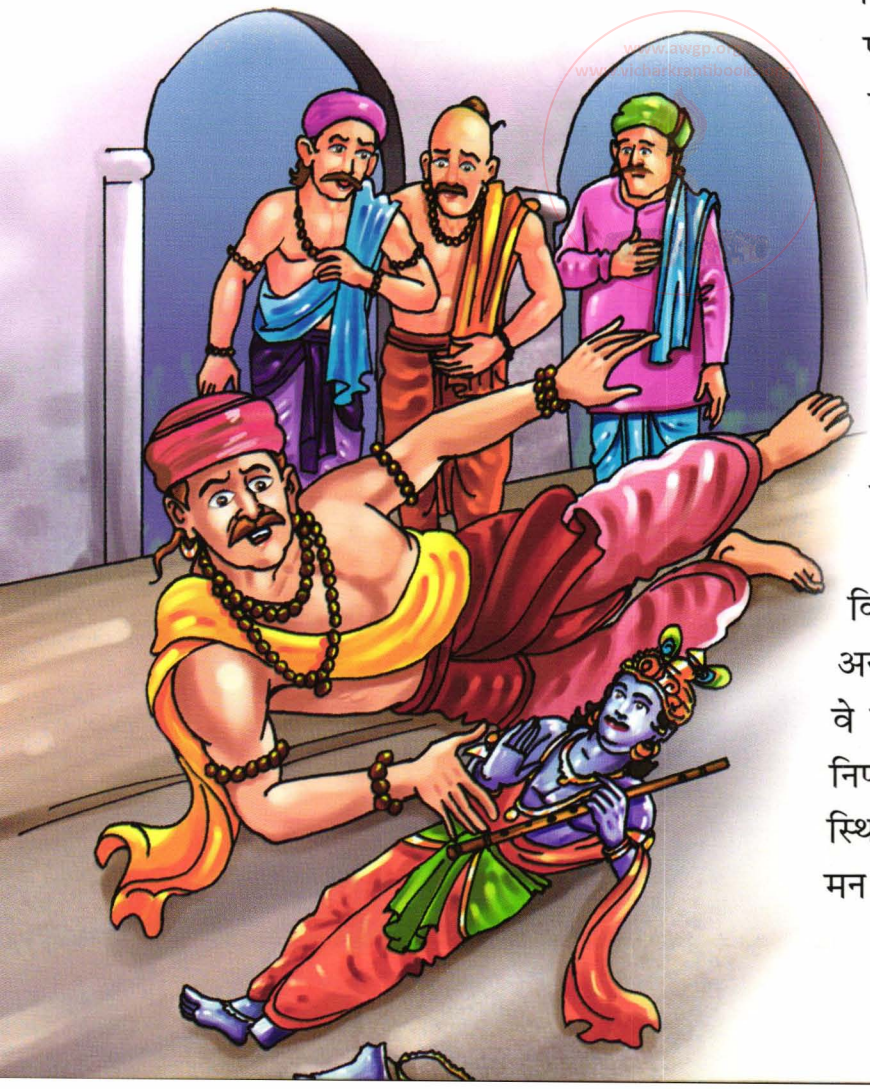

रानी उदास हो गईं। भला इतनी श्रद्धा और प्रेम से जिन गोविंद जी को इतने दिन पूजा जाता रहा, उन्हें थोड़ी सी बात पर जल में विसर्जित कर देने का कारण उनकी समझ में नहीं आया।

रानी स्वामी रामकृष्ण पर विशेष श्रद्धा रखती थीं। उनकी अनूठी निष्ठा व भक्ति के कारण वे उनके द्वारा दिए जाने वाले निर्णय को स्वीकार करने की स्थिति में भी थीं। रानी ने अपने मन की व्यथा रामकृष्ण से कह

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुनाई। सुनकर उन्होंने रानी से प्रश्न किया—"यदि आपके जामाताओं में से किसी एक का पाँव टूट जाता, तो वह उनकी चिकित्सा करवातीं या उनके स्थान पर दूसरे को ले आतीं?"

"मैं अपने जामाता की चिकित्सा कराती, उन्हें त्यागकर दूसरा नहीं ले आती।"

"बस उसी प्रकार मूर्ति के टूटे पैर को जोड़कर उसकी सेवा-पूजा यथावत होती रहे तो उसमें दोष ही क्या है।"

श्री रामकृष्ण परमहंस के इस सहज विधान को सुनकर रानी हर्षित हो उठीं। उन्हें स्वामीजी की बात ही पसंद थी। उन्होने ब्राह्मणों के विरोध की चिंता नहीं की। स्वामीजी ने टूटे विग्रह के पाँव को ऐसा जोड़ दिया कि कुछ पता ही नहीं चलता। पूजा-सेवा उसी प्रकार चलती रही।

एक दिन किन्हीं जमींदार महाशय ने उनसे पूछा—"मैंने सुना है आपके गोविंद जी टूटे हैं।" इस पर वे हँसकर बोले—"आप भी कैसी भोली बातें करते हैं, जो अखंड मंडलाकार हैं, वे कहीं टूटे हो सकते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सिकंदर का मित्र पर विश्वास

सिकंदर को एक ऐसी बीमारी हुई जो ठीक नहीं हो सकती थी। उसका मरना निश्चित मानकर कोई चिकित्सक बदनामी के भय से दवा देने का साहस नहीं कर रहा था। इस असमंजस भरी परिस्थिति में सिकंदर के एक स्वामिभक्त नौकर फिलिप ने दवा बनाई और उसे अच्छा हो जाने का आश्वासन दिया।

चुगलखोरों ने सिकंदर को पत्र लिखकर सूचना दी कि फारस के राजा ने फिलिप से समझौता किया है कि वह आप को दवा के बहाने से विष देकर मार डाले। बदले में उसे बहुत सारा धन देने का लालच भी दिया है। सिकंदर ने पत्र तकिये के सिरहाने रख लिया और फिलिप की दवा लेता रहा। उससे वह अच्छा भी हो गया। बाद में गुप्त सूचना से विष दिए जाने की बात प्रकट हुई तो सिकंदर ने कहा— "विश्वास का सर्वथा त्याग करके भी मनुष्य नहीं जी सकता।" सिकंदर ने जीवन का एक बहुत बड़ा सत्य सहजता से स्पष्ट कर दिया था। परंस्पर विश्वास करके ही हम आगे बढ़ते हैं, उन्नति करते हैं। नौकर पर विश्वास होने के कारण सिकंदर को विष भी बहुत अधिक नुकसान न पहुँचा पाया।

किसी के साथ विश्वासघात करना मानव जीवन का कलंक है।

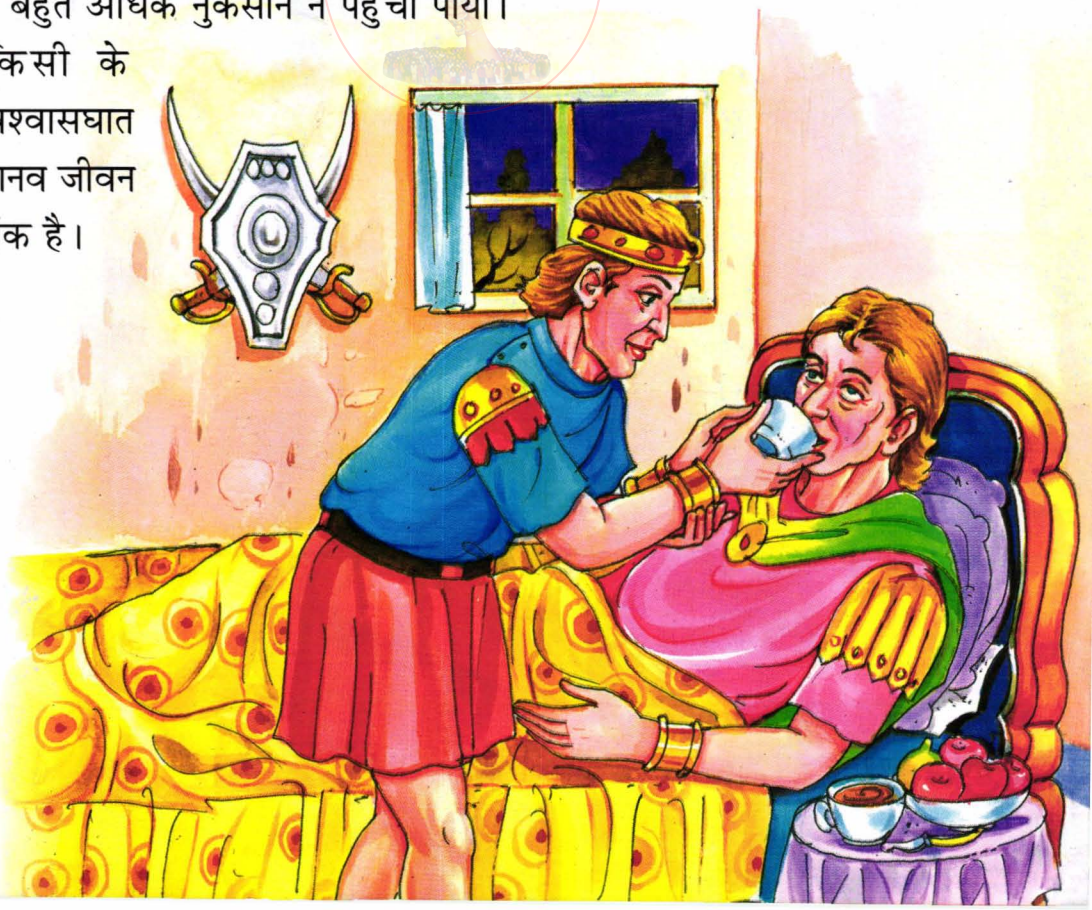

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कर्म ही संस्कार बनते हैं

एक बार एक बड़े त्यागी महात्मा किसी गृहस्थ के घर धर्मोपदेश करने गए और वहाँ से एक सोने का हार चुरा लाए। तीसरे दिन वे बड़े दुखी हुए और जाकर हार लौटाते हुए क्षमा माँगी कि मुझसे बहुत बड़ी भूल हो गई। गृहस्थ को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने त्यागी और विद्वान होते हुए भी क्यों इन्होंने हार चुराया और क्यों लौटाने आए?

महात्माजी ने बताया कि उस दिन उन्होंने जिस व्यक्ति के यहाँ से भिक्षा ली थी वह चोर था, उसका अन्न भी चोरी से लाया हुआ था। उसे खाने से मेरी बुद्धि में चोरी के संस्कार पैदा हुए। दूसरे दिन इसके बाद मुझे दस्त शुरू हो गए और वह चोरी का अन्न पेट से बाहर निकल गया। तब सुबुद्धि लौटी और आपके हार को लौटाने आया।

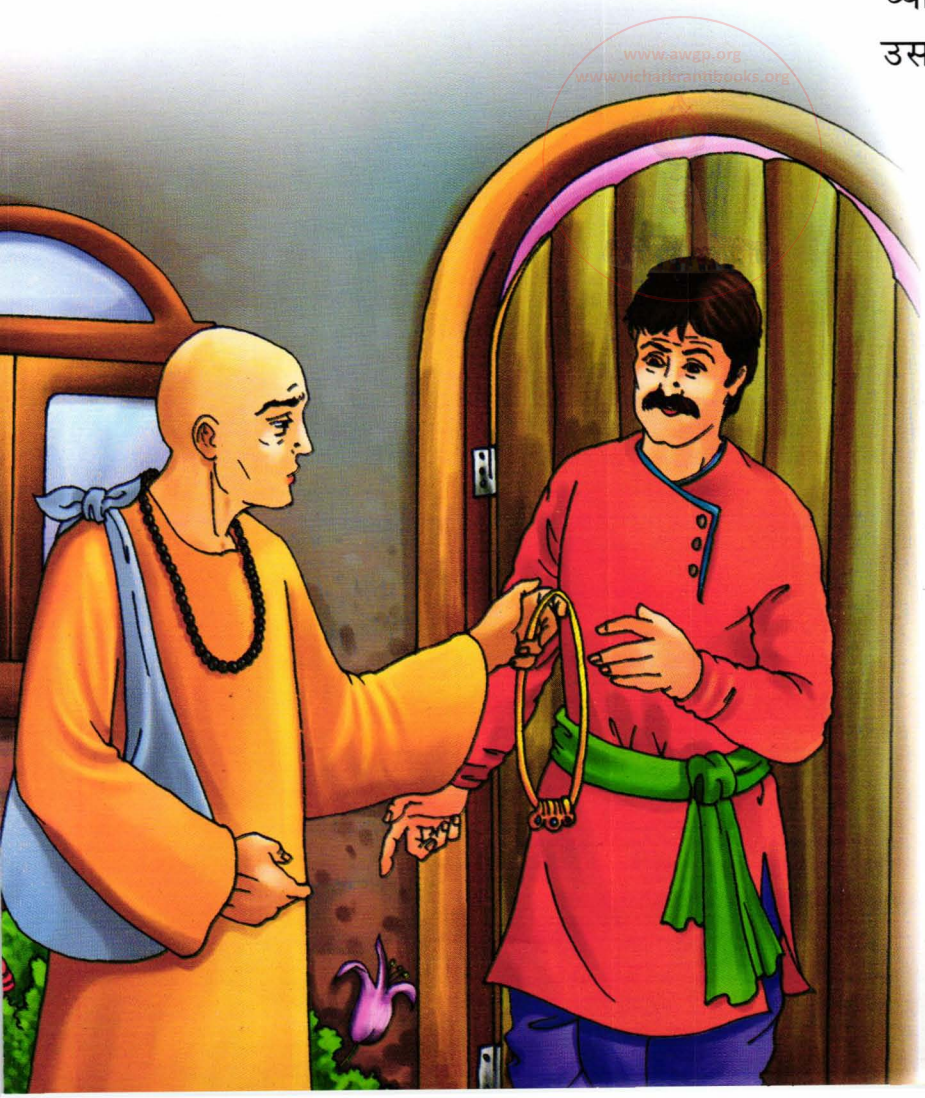

व्यक्ति के बोलने से, उसकी वाणी से उस व्यक्ति के गुण, कर्म एवं स्वभाव का परिचय मिल जाता है।

व्यक्ति के गुण, कर्म संस्कार बन जाते हैं। वे उसके अन्य वस्तु में भी आ जाते हैं अतः हमें अच्छे लोगों का ही साथ रखना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

द्रौपदी के पुत्र मारे गए

जब महाभारत का युद्ध समाप्त हो गया, तब अश्वत्थामा ने सोचा, पांडवों को कपट से जब सो रहे हों, तब मार दूँगा। भगवान कृष्ण पांडवों के रक्षक थे। भगवान कृष्ण ने पांडवों को सोते से जगाया, कहा—"मेरे साथ गंगा किनारे चलो।" पांडव प्रभु की बात बिना कुछ सोचे खुशी-खुशी मान लेते थे। वे कृष्ण के साथ उठकर चल दिए।

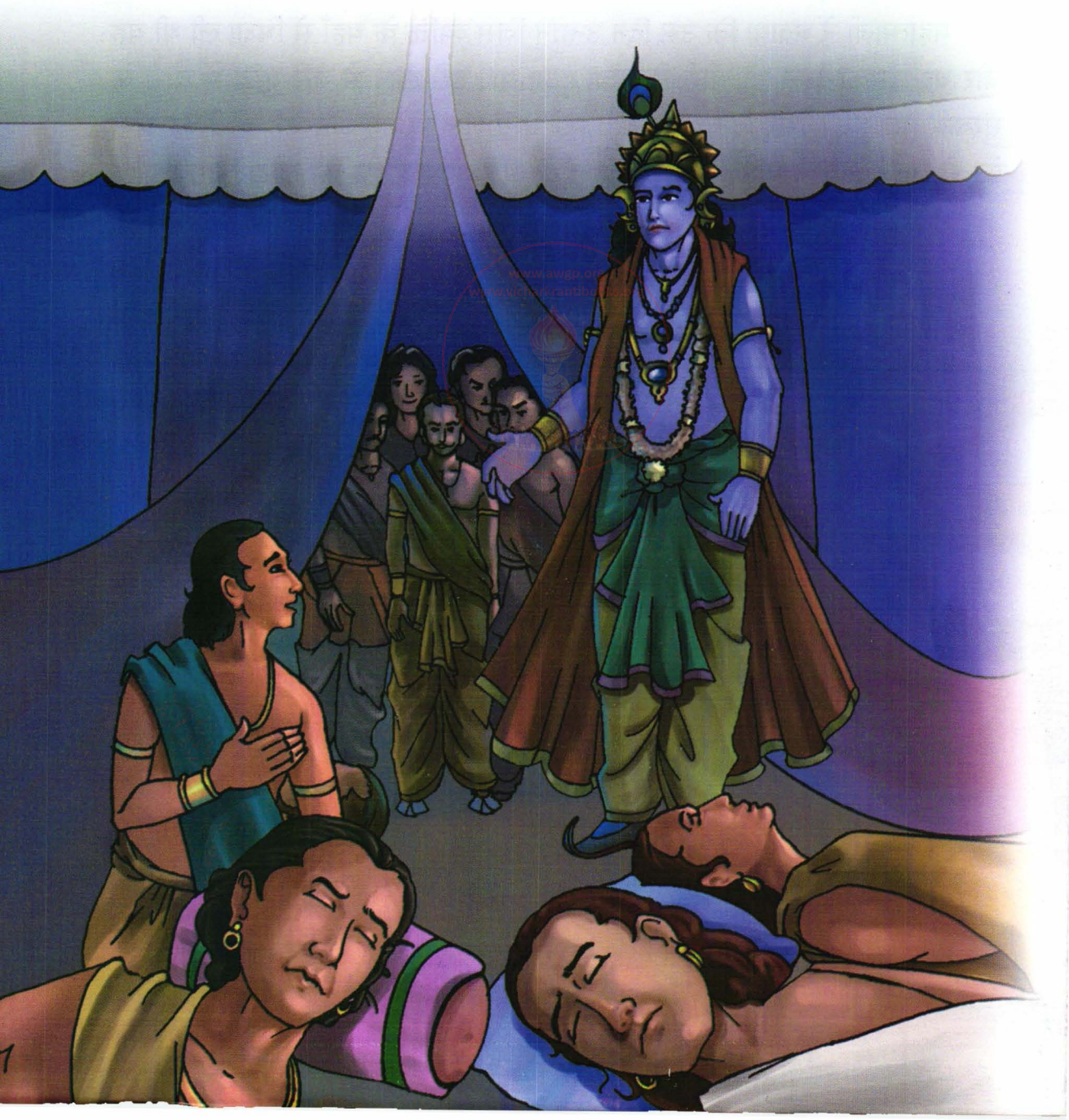

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रीकृष्ण ने द्रौपदी पुत्रों से भी साथ चलने को कहा, परंतु वे बालक थे, नासमझ थे इनकार कर दिया और कहा—"आप जाओ, हमें तो नींद आ रही है, सोएँगे।" अश्वत्थामा आया और पुत्रों पर प्रहार कर दिया। प्रभु के जगाने पर जो जाग गए, बच गए।

जिनने सोने की जिद्द की वे ही मारे गए। प्रभु की बिना माँगे सहायता का लाभ केवल वे ही उठा पाते हैं जो भगवान पर विश्वास रखते हैं।

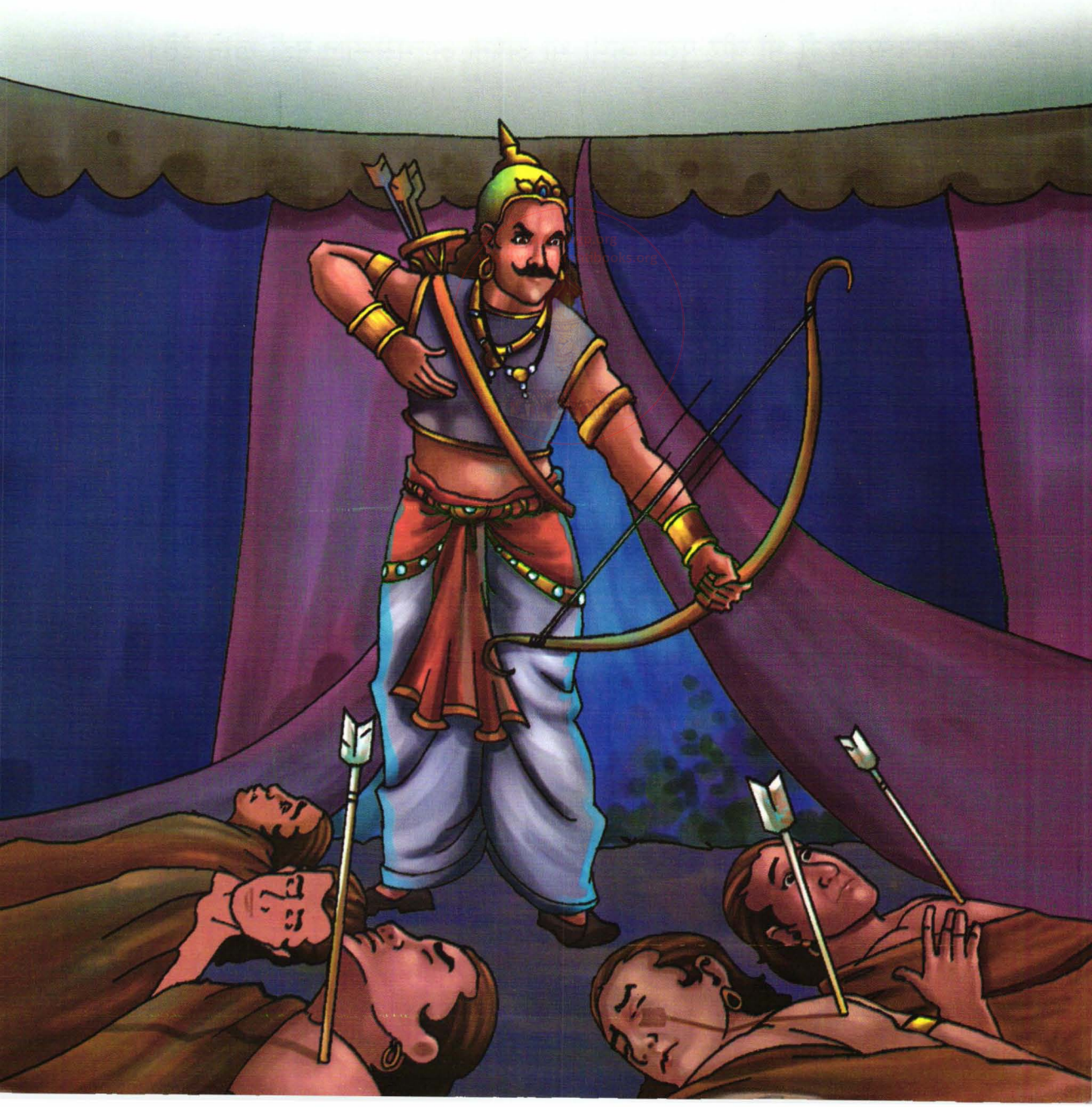

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पुरु का आत्मगौरव

महाराज पुरु सिकंदर से युद्ध में हार गए और बंदी बनाकर सिकंदर के सामने लाए गए। सिकंदर ने कहा—"आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए?" पुरु ने जवाब दिया—"ठीक वैसा ही जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है।" महाराज पुरु की इस आत्मसम्मान एवं बड़ी ऊँची भावना वाले शब्दों को सुनकर सिकंदर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने महाराज पुरु को छोड़ दिया और उनका राज्य भी लौटा दिया।

कठिन समय में भी वीर पुरुष कभी भी अपना आत्मसम्मान नहीं खोने देते।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

वैज्ञानिक की परीक्षा

एडीसन महान वैज्ञानिक हुए हैं। वे गरीब माँ के बेटे थे, पर बचपन से ही वैज्ञानिक बनने की बात किया करते थे। माँ ने सोचा इसे किसी वैज्ञानिक के पास रख दूँ, तो शायद इसका समाधान हो जाए। विज्ञान पढ़ाने के लिए माँ के पास धन नहीं था।

एक वैज्ञानिक के पास वे एडीसन को ले गईं। वैज्ञानिक ने एडीसन को एक झाड़ू देकर अपनी प्रयोगशाला की सफाई करने को कहा। एडीसन ने हर काम बड़े करीने से किया। कहीं किसी भी कोने में भी गंदगी न छोड़ी और हर सामान सफाई के बाद यथास्थान जमा दिया।

वैज्ञानिक ने यह सब देखकर कहा— ''इस बालक में वैज्ञानिक बनने के गुण हैं। आप इसे मेरे पास छोड़ दें। यह वैज्ञानिक जरूर बन जाएगा। सफाई और व्यवस्था से मनुष्य के व्यक्तित्व के विकास की क्षमता बढ़ती है और उसी से उसके स्तर का पता भी लग जाता है।''

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शब्द का घाव

जंगल में एक ब्राह्मण रहता था। बुढ़ापे में वह काम करने में असमर्थ हो गया। वह सूखी लकड़ियाँ पास के जंगल से बीनकर गाँव में बेच आता और किसी प्रकार निर्वाह चलाता। एक दिन लकड़ी भी थोड़ी मिली और दुर्भाग्यवश एक बाघ झाड़ी से निकलकर सामने आ खड़ा हुआ। ब्राह्मण प्राण जाने के भय से थर-थर काँपने लगा। इतने में उसे एक तरकीब सूझी। दोनों हाथ ऊपर उठाकर प्रसन्न मुद्रा में आशीर्वाद का मंत्र पढ़ने लगा।

बाघ को इस विचित्र व्यवहार का कारण जानने की इच्छा हुई और झपटने से पूर्व बोला—"तुम कौन हो और ऐसी विचित्र भाषा में क्या कह रहे हो?"

ब्राह्मण ने कहा—"मैं तुम्हारा कुल पुरोहित हूँ। तुम्हारे सभी पूर्वज मेरे यजमान रहे हैं और समय-समय पर विपुल दक्षिणा देते रहे हैं। अब तक तुमसे भेंट नहीं हो पाई थी, सो प्रतीक्षा में बैठा था। प्रसन्न होकर आशीर्वाद के मंत्र पढ़ने लगा। तुम्हारा कल्याण हो। अपने पूर्वजों की भाँति जो दक्षिणा बने, सो देने का प्रयत्न करो।"

बाघ इस विचित्र कथन पर सकपका गया और पुरोहित को प्रणाम करके बोला—"देखते हैं न, मेरे हाथ सर्वथा खाली हैं। शरीर से कुछ काम कराना चाहें, तो कर दूँ।" ब्राह्मण ने कहा—"यजमान तुम्हारी श्रद्धा बहुत सराहनीय है। इतना भर कर दो कि मेरी

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लकड़ियाँ अपनी पीठ पर लादकर सामने वाले गाँव तक पहुँचा दो।'' बाघ सहमत हो गया और ब्राह्मण के द्वारा लादे बोझ को गाँव की सीमा तक पहुँचा दिया।
बाघ ने कहा—''ऐसी सेवा तो मैं रोज कर दिया करूँगा। इसी समय तुम मेरी प्रतीक्षा किया करना।''

ब्राह्मण नित्य लकड़ी का गट्ठा जमा करता। बाघ उसे ढोकर नित्य गाँव तक पहुँचाता। इस प्रकार कितने ही दिन बीत गए। एक दिन बाघ विलंब से आया तो ब्राह्मण ने उसे बहुत खरी-खोटी सुनाईं और शाप देने की धमकी दी। बाघ चुप रहा। गट्ठा पहुँचाने के बाद उसने ब्राह्मण से कहा—''आज मेरा एक काम कर दो। कल से मैं नहीं आऊँगा।'' ब्राह्मण ने तेवर बदले देखकर समझा कि कहना न मानने में खैर नहीं। सो उसने नम्र होकर आदेश पूछा। बाघ ने कहा—''अपनी लकड़ी काटने की कुल्हाड़ी से मेरे कंधे पर घाव कर दो।''

असमंजस के बाद उसने वैसा कर भी दिया। घाव छोटा ही था। बाघ चला गया और दूसरे दिन से फिर न आया। एक-दो महीने बीतने पर बाघ फिर प्रकट हुआ। उसने ब्राह्मण को अपना घाव दिखाते हुए पूछा—''यह अच्छा हो गया है न। पर अभी भी उस दिन के कटु वचनों का घाव ज्यों का त्यों हरा है और तुम्हारे जैसों से कोई व्यवहार न रखने की नसीहत दे गया है।''

शस्त्र से मिला घाव समय आने पर भर जाता है परंतु वाणी से किया गया घाव कभी भरता नहीं है। इसलिए सोच-समझकर ही शब्द मुँह से निकालने चाहिए।

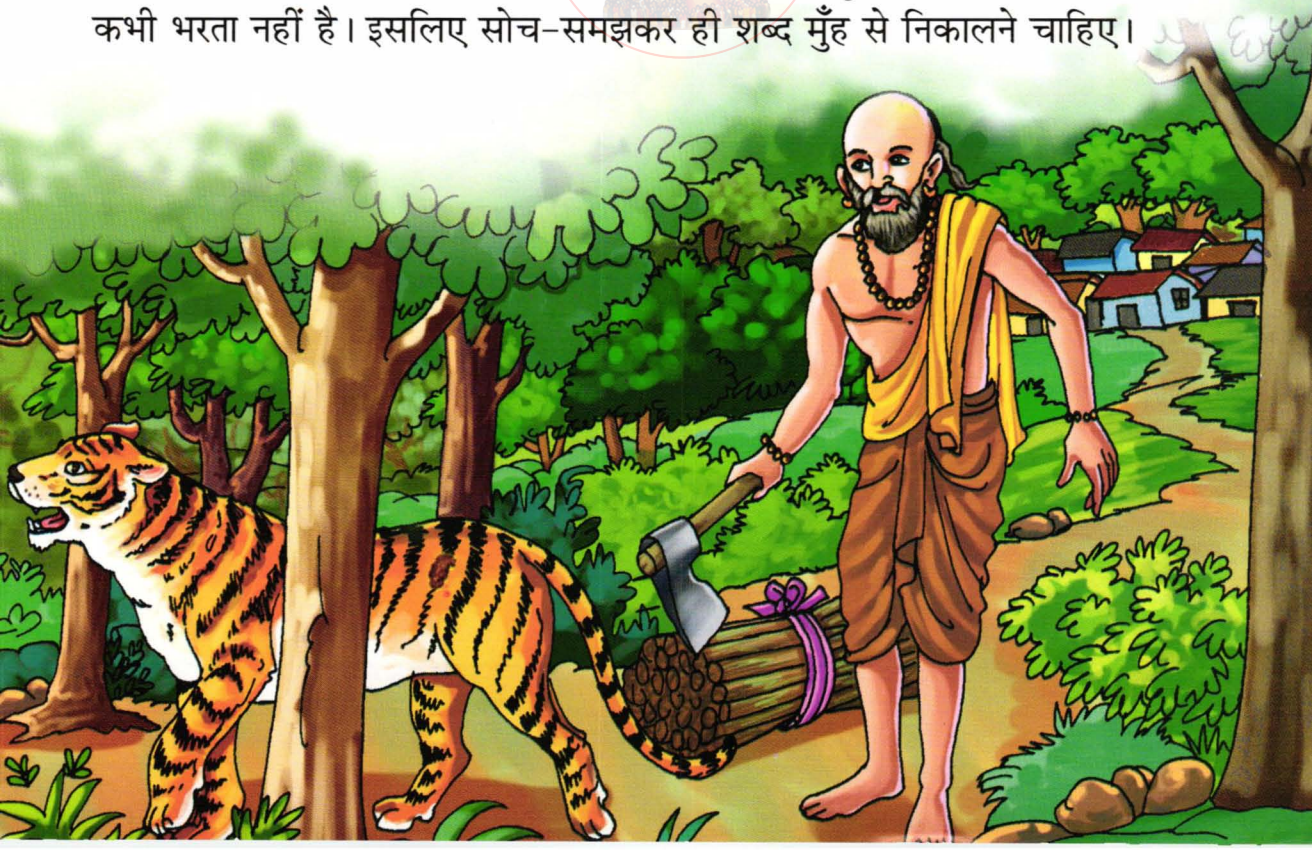

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुभाष का स्वाभिमान

कलकत्ते के प्रेसीडेंसी कॉलेज में एक भारतीय छात्र को बड़ी मुश्किल से दाखिला मिला था। उस पर भी अँगरेजी के प्रोफेसर का व्यवहार यह था कि वह बात-बात में भारतियों को अपमान भरे शब्द कहा करता था। अभी तक कॉलेज में इन बातों का कोई विरोध करने वाला था नहीं। जब भारतीय छात्र आ गया तो भी प्रोफेसर ने पुराना रवैया बदला नहीं।

एक दिन जैसे ही उन्होंने भारतियों के प्रति अपमानजनक शब्द कहे, युवक ने यह जानते हुए भी कि वह कॉलेज से निष्कासित किया जा सकता है, प्रोफेसर साहब के गाल पर तमाचा जड़ दिया। इस कारण वह छात्र कॉलेज से निकाल दिया गया, पर उस भारतीय ने कभी अन्याय के आगे सिर नहीं झुकाया। वह युवक श्री सुभाषचंद्र बोस थे। उसके बाद से प्रेसीडेंसी कॉलेज में स्वत: ही भारतियों की निंदा बंद हो गई।

अनीति को पनपने न दिया जाए तो वह एक न एक दिन नष्ट होती है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सच्ची भक्ति

एक बार शिवरात्रि का पर्व था । महाराष्ट्र के औढ़िया नामक स्थान में नामदेव भगवान शंकर के दर्शनों के लिए गए। नामदेव भगवान के मंदिर पर चढ़ गए, व नाचने लगे। तभी मंदिर के प्रबंधक दौड़े और बोले—"नीच (श्री नामदेव दर्जी या छीपी जाति के थे) तू ऊपर मंदिर में क्यों चढ़ आया?" और नामदेव को धक्के मारकर नीचे उतार दिया गया। नामदेव ने अपने अपमान का ख्याल तो भुला दिया स्वयं पिछवाड़े खड़े होकर कीर्तन करने लगे। न जाने कौन सी शक्ति थी जिस पर सारा महाराष्ट्र और देश चकित है कि भगवान शिव की मूर्ति ने अपना मुँह नामदेव की ओर फेर लिया और अपने भक्त को दर्शन दिया। इस घटना के बोधस्वरूप आज भी इस मंदिर का 'नादिया' शिवजी के सम्मुख न होकर पीठ पीछे प्रतिष्ठित है। सच्ची भक्ति के प्रभाव से लोग नत-मस्तक हुए और श्री नामदेव के लिए मंदिर के द्वार खोल दिए गए।

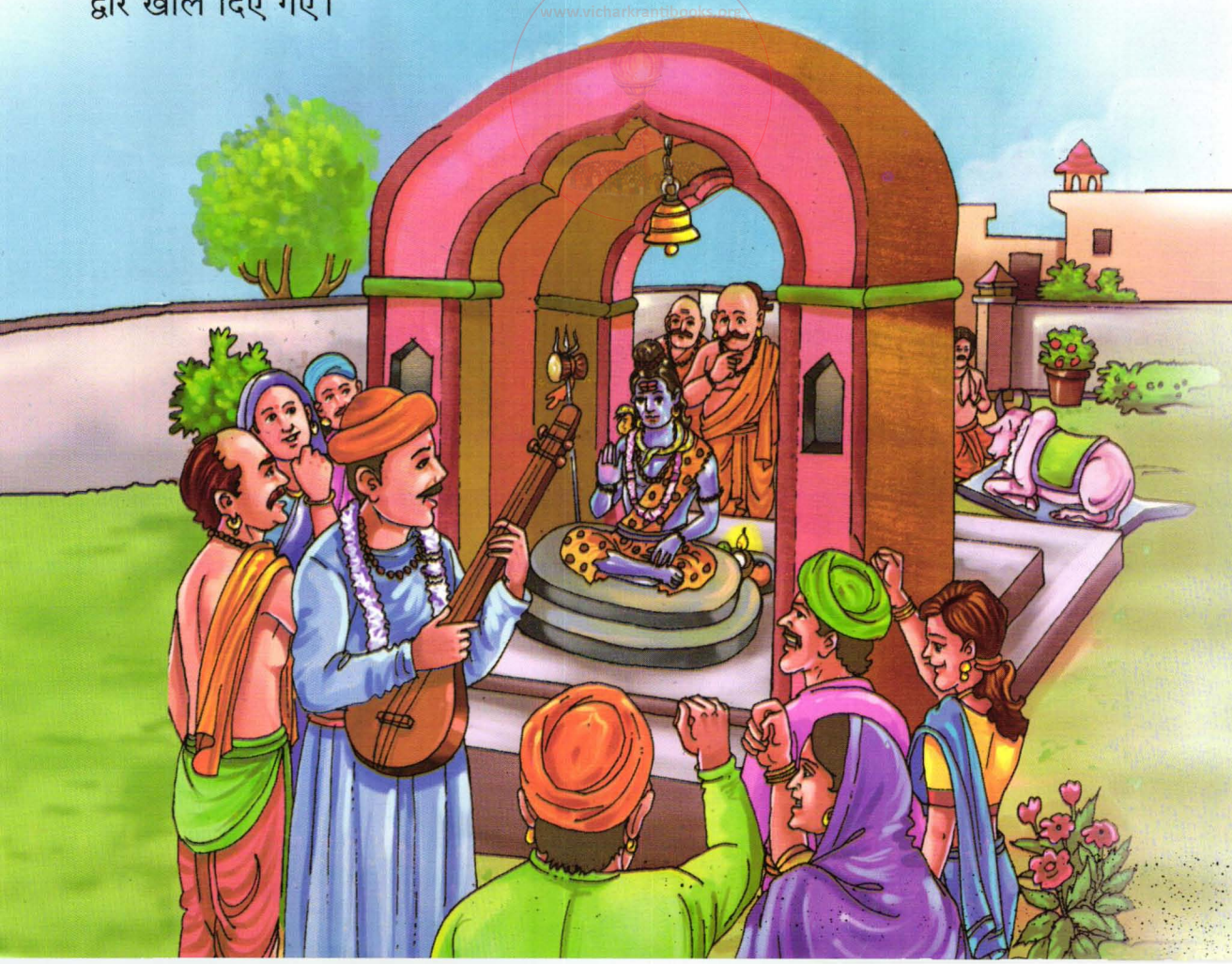

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दरिद्रनारायण

दीनबंधु एण्ड्रूज प्रारंभिक जीवन में पादरी थे। उनसे किसी भारतीय साधु ने पूछा—"आपने भगवान देखा है?" उनने कहा—"मैंने देखा है। आप चाहें, तो आपको भी दिखा सकता हूँ।" वे उन्हें एक हरिजन मुहल्ले में ले गए और एक सफाई कर्मचारी को दिखाया, जो अपने टी० बी० की बीमारी से दुर्बल बेटे की सेवा में लगा रहता था और रोटी कमाने के लिए सफाई के काम पर भी जाता था। ऐण्ड्रूज ने कहा—"देखा! यही भगवान है। इसका नाम दरिद्रनारायण है।" बापू ने उनका नाम सही ही दीनबंधु रखा था।

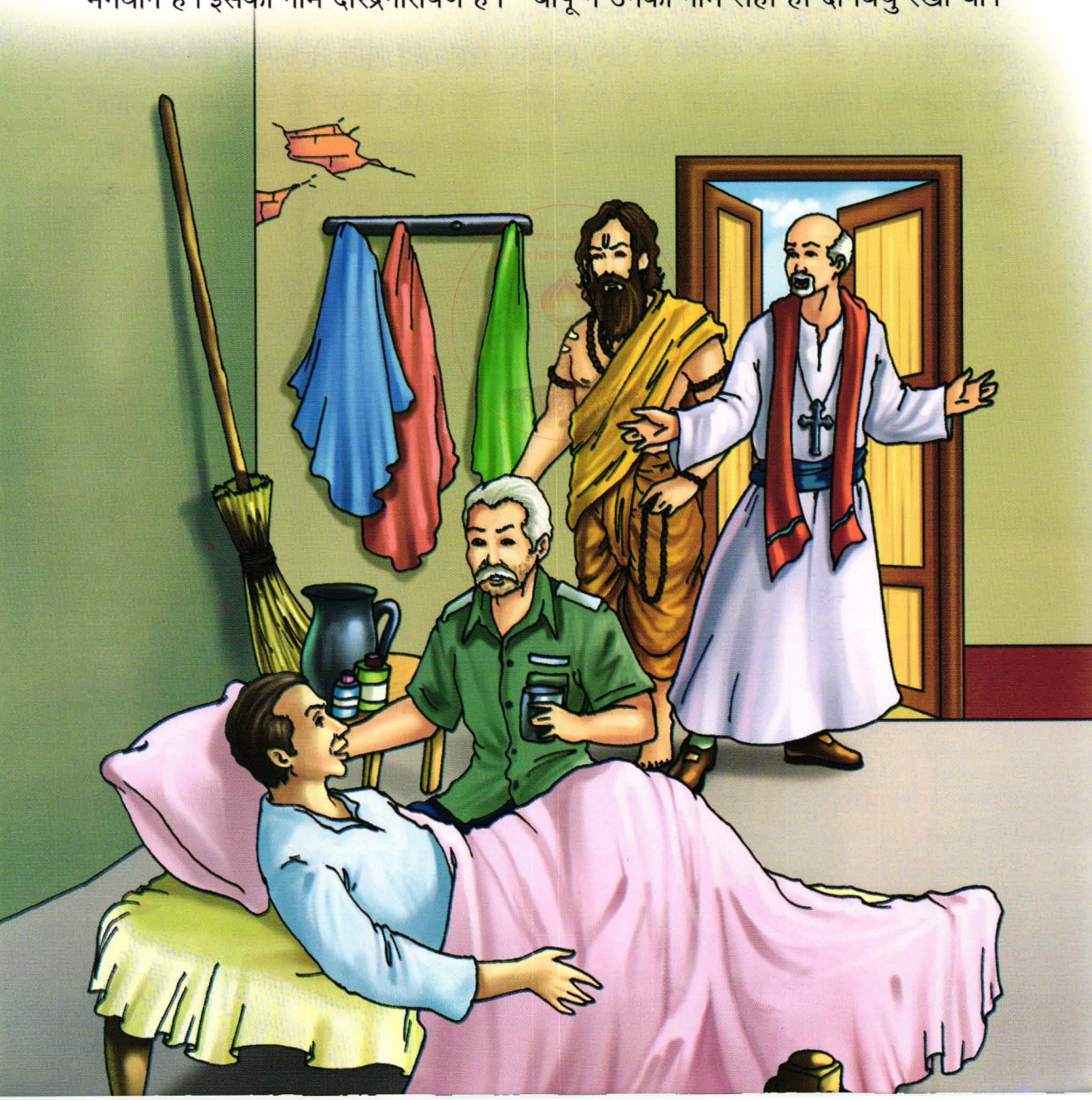

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सत् शिक्षाओं का मूल्य

एक मूर्ख मल्लाह था। वह यात्रियों को बिठाकर पार ले जाता और उतर जाने पर किराया माँगता। इस पर आएदिन झंझट होता। कटु शब्द कहने पर उसकी पिटाई भी रोज होती। एक दिन एक संत उसकी नाव में पार उतरे। रास्ते में उनने उसे दो शिक्षाएँ दीं। एक तो यह कि यात्रियों को चढ़ाने से पहले ही किराया वसूल कर लिया करे और बात-बात में आवेश में न आया करे। वार्त्ता करते रास्ता कट गया। संत से किराया माँगा, तो उनने कहा—"उनके पास तो कुछ भी नहीं है। जो शिक्षाएँ दी हैं, वे कम मूल्यवान नहीं हैं।" मल्लाह ने कहा—"मुझे शिक्षा नहीं पैसा चाहिए।" झगड़ा बढ़ने लगा। इतने में नाविक की पत्नी भोजन लेकर आई और पति को समझाया कि यह राजगुरु हैं। इनसे झगड़ा ठीक नहीं। पत्नी की शिक्षा पर उसका क्रोध और भी दूना हो गया और थाली सहित भोजन पानी में फेंक दिया। समाचार राजा तक पहुँचा, उनने सेना भेजी और मल्लाह को जेल भिजवा दिया, उसकी नाव भी जप्त कर ली। संत ने उसे जाकर छुड़ाया और समझाया कि जो दो शिक्षाएँ उसे दी थीं, वे उसे आर्थिक लाभ भी देंगी और हानियों से भी बचाएँगी।

मल्लाह की समझ में अब वे शिक्षाएँ आईं और उसके अनुसार आचरण करके सुखी रहने लगा।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तेजस्वी ब्राह्मण अष्टावक्र

एक बार राजा जनक की शोभा यात्रा निकल रही थी इसलिए रास्ते में किसी को आने की इजाजत नहीं थी, सब को रोक दिया गया। सब व्यक्ति अपने-अपने काम तक छोड़कर जहाँ थे वहीं रुक गए।

राह में अष्टावक्र जा रहे थे। अष्टावक्र को हटाया गया तो उन्होंने हटने से इनकार कर दिया और कहा—"प्रजाजनों के आवश्यक कार्यों को रोककर अपनी सुविधा का प्रबंध करना राजा के लिए उचित नहीं। राजा अनीति करे तो ब्राह्मण का कर्त्तव्य है कि उसे रोके और समझाए। सो आप राज्याधिकारी गण राजा तक मेरा संदेश पहुँचाए और कहें कि अष्टावक्र ने गलत आदेश मानने से इनकार कर दिया है। वे हटेंगे नहीं और राजपथ पर ही चलेंगे।"

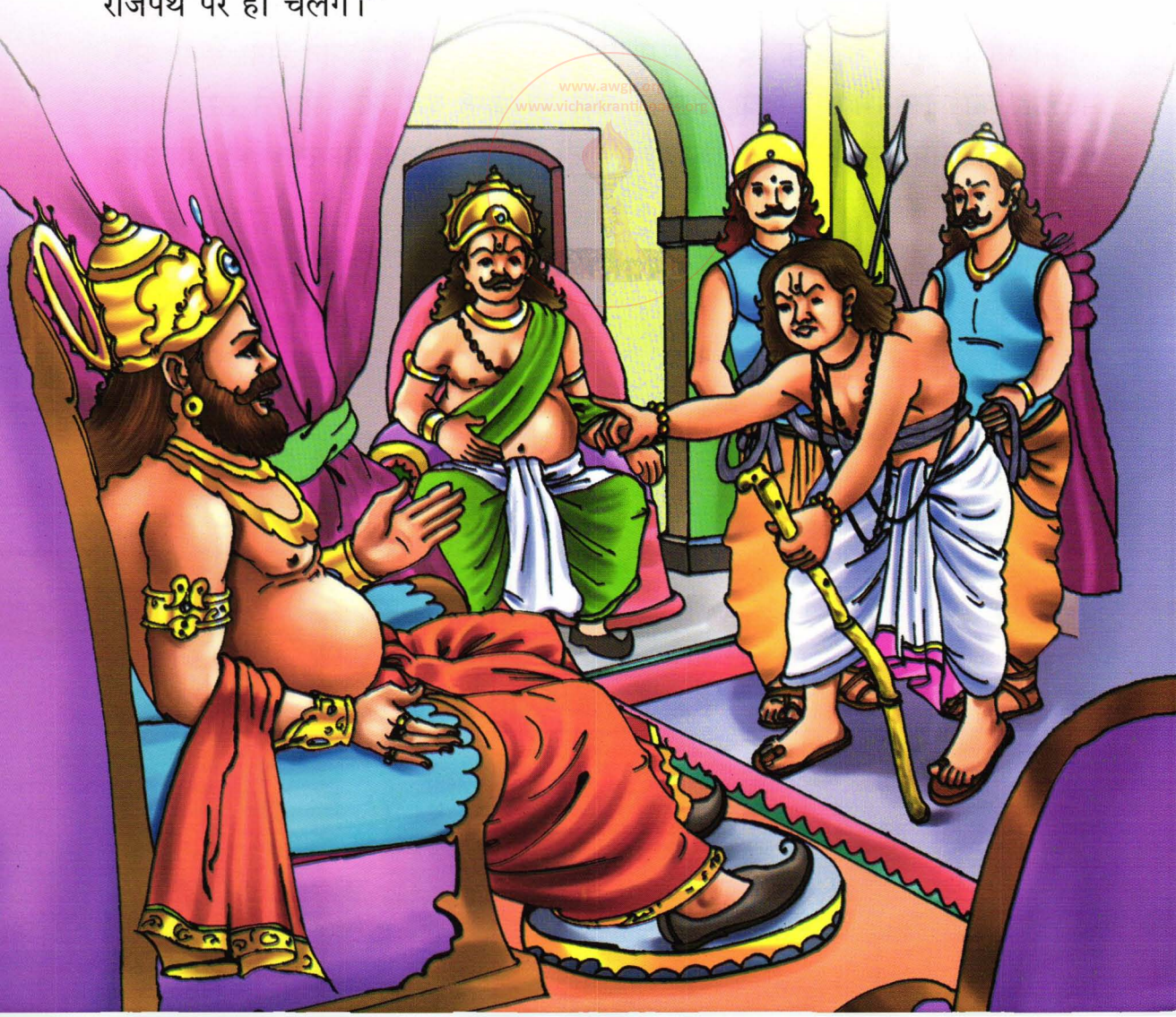

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राज्याधिकारी क्रोधित हुए और अष्टावक्र को बंदी बनाकर राजा के पास ले पहुँचे। जनक ने सारा किस्सा सुना तो वे बहुत प्रभावित हुए और कहा—"इतने तेजस्वी ब्राह्मण जहाँ मौजूद हैं जो राजा तक को ताड़ना कर सकें, वह देश धन्य है। नीति और न्याय के पक्ष में आवाज उठाने वाले सत्पुरुषों के द्वारा ही जनमानस की महानता स्थिर रह सकती है। ऐसे निर्भीक ब्राह्मण राष्ट्र की सच्ची संपत्ति हैं। उन्हें दंड नहीं सम्मान दिया जाना चाहिए।"

राजा जनक ने अष्टावक्र से क्षमा माँगी और कहा—"मूर्खतापूर्ण आज्ञा चाहे राजा की ही क्यों न हो तिरस्कार के योग्य है। आपकी निर्भीकता ने हमें अपनी गलती समझने और सुधारने का अवसर दिया। आज से आप राजगुरु रहेंगे और इसी निर्भीकता से सदा न्याय पक्ष का समर्थन करते रहने की कृपा करेंगे।"

अष्टावक्र ने वह प्रार्थना जनहित की दृष्टि से स्वीकार कर ली।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लोटे के पानी में नाव

जीव और ब्रह्म की एकता का विश्लेषण करते हुए गंगातट पर बैठे हुए एक तत्त्वदर्शी कह रहे थे कि जीव ईश्वर का ही अंश है। जो गुण ईश्वर में हैं, वे जीव में भी मौजूद हैं। सुनने वालों में से एक ने पूछा—"भगवन्! ईश्वर तो सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं, पर जीव तो कम बुद्धि और कम सामर्थ्य वाला है, फिर इस भिन्नता के रहते एकता कैसी?"

प्रवचनकर्त्ता ने जिज्ञासु से कहा—"एक लोटा गंगाजल भर लाओ।" वह नीचे बहती हुई गंगा में से जल भर लाया। उससे पूछा गया—"गंगा के जल और इस लोटे के जल में कोई अंतर तो नहीं है?" जिज्ञासु ने कहा—"नहीं।" तत्त्वदर्शी ने कहा—"सामने गंगाजल में नावें चल रही हैं। एक नाव इस लोटे के जल में भी चलाओ।" जिज्ञासु ने कहा—"लोटा छोटा है, इसमें थोड़ा सा जल है, इतने में भला नाव कैसे चलेगी?"

प्रवचनकर्त्ता ने गंभीर होकर कहा—"प्रिय! जीव एक छोटे दायरे में सीमाबद्ध होने के कारण लोटे के जल के समान छोटा और अशक्त बना हुआ है। यदि यह जल पुनः गंगा में लौटा दिया जाए तो उस पर नाव चलने लगेगी। इसी प्रकार यदि जीव अपनी संकीर्णता के बंधन काटकर महान बन जाए तो उसे ईश्वर जैसी सर्वज्ञता और सर्वशक्ति संपन्नता सहज ही प्राप्त हो सकती है।"

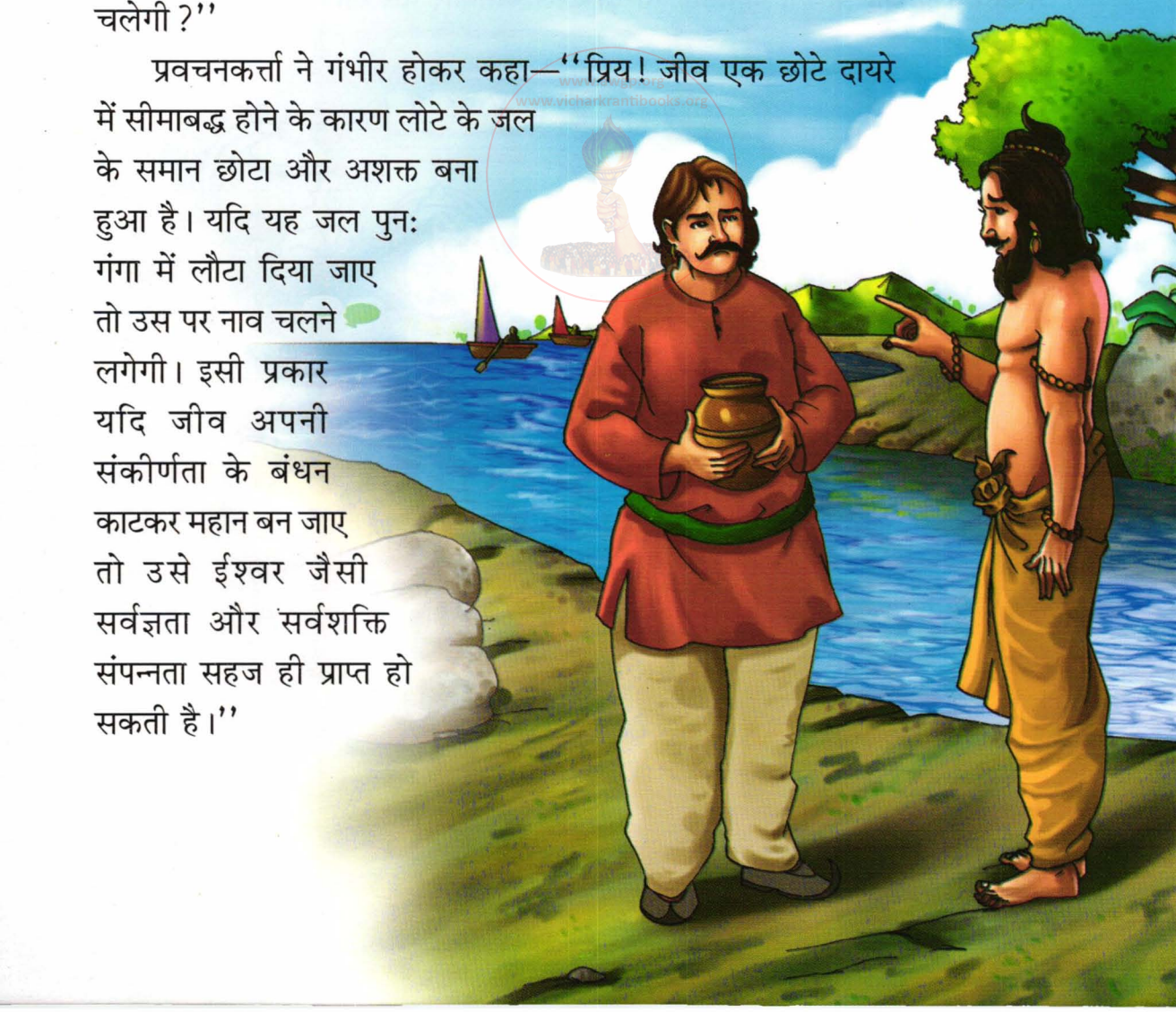

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

आयु मात्र पाँच वर्ष

राजा शतायुध प्रजा का हाल-चाल देखने के लिए निकले। एक झोपड़ी में बहुत ही दुबला सा वयोवृद्ध दीखा। राजा रुक गए। कुतूहलवश पूछा—"आपकी आयु कितनी है?" देखने में लगभग सौ वर्ष की आयु के दीखते थे। वृद्ध ने झुकी गरदन उठाई और कहा—"मात्र पाँच वर्ष।" राजा को विश्वास न हुआ। फिर से पूछा, तो वही उत्तर मिला। वृद्ध ने कहा—"पिछला जीवन तो पशु प्रयोजनों में बेकार ही चला गया। पाँच वर्ष पूर्व ज्ञान उपजा और तभी से मैं परमार्थ प्रयोजन में लगा। मैं अपनी सार्थक आयु तो तभी से गिनता हूँ।"

जीवन के उतने ही वर्ष सार्थक मानना चाहिए जिसमें दूसरों के लिए कुछ किया जाता है।

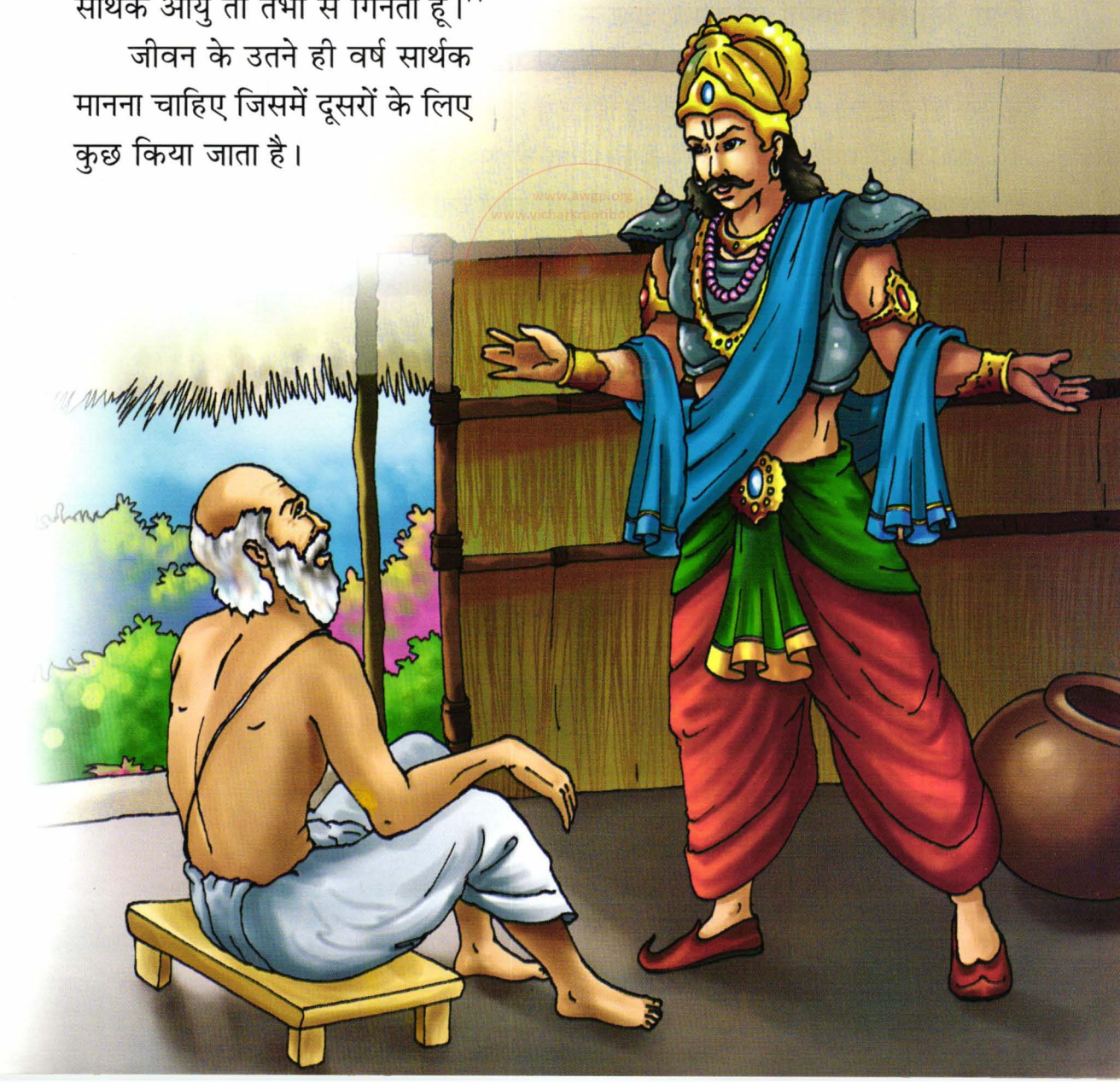

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

अंधी, गूँगी, बहरी–हेलन केलर

हेलन केलर का नाम हर शिक्षित ने सुना होगा, जिसके साथ प्रकृति ने बदी करने में कोई कमी नहीं रहने दी। वह अंधी, बहरी, गूँगी तीनों ही व्यथाओं से पीड़ित थी। पर अपनी सूझ–बूझ और संकल्प बल के सहारे शिक्षाप्राप्ति का कोई न कोई तरीका निकालती रही और बुद्धि–कौशल के सहारे सफल होती रही। उसने अँगरेजी में एम० ए० पास किया और साथ ही लैटिन, फ्रेंच, जर्मन आदि में प्रवीण थी। घरेलू काम रोटी बनाने से लेकर कपड़े धोने तक वह भलीभाँति कर लेती थी। उसने कुशलता का उपयोग अपने ही लिए नहीं वरन अपंगों की शिक्षा तथा स्वावलंबन के लिए सारे संसार में भ्रमण करके करोड़ों रुपया एकत्रित किया। उसकी विद्या से प्रभावित होकर कितने ही विश्वविद्यालयों ने उसे डॉक्ट्रेट की मानद उपाधि दी। लोग उसे देखकर संसार का आठवाँ आश्चर्य कहते।

संत इन्हीं गुणों से बनते हैं। अपने लिए तो सभी जीते हैं, जो औरों का हित करता है, उसका जीवन ही सार्थक है। स्वस्थ इंद्रियों वाले व्यक्ति भी अभावों का रोना रोते रहते हैं। अंधी, गूंगी, बहरी हेलन केलर ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि मनुष्य में दृढ़ निश्चय और संकल्प हो, वह अध्यवसाय से निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता रहे तो असंभव भी संभव हो जाता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

पंचतत्त्वों का झगड़ा

पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश इन पाँच तत्त्वों की मंडली एक सुरम्य पर्वत पर पहुँची। चर्चा छिड़ी तो अपने-अपने को बड़ा बताने लगे।

पृथ्वी बोली—"सारी दुनिया का बोझ मैं उठाती हूँ। सबका पेट भी मैं ही भरती हूँ।" जल ने कहा—"मेरे बिना जीवन ही नहीं। वनस्पति न प्राणी; सब कुछ सूखा दीखे और त्राहि-त्राहि मचे।" पवन बोला—"दीखता नहीं हूँ, तो क्या । मेरे बिना घुटन ही सबका गला न घोंट देगी?" अग्नि ने कहा—"गरमी-रोशनी के बिना इस लोक में जाड़ा और निस्तब्धता के अतिरिक्त और क्या बचेगा?" चारों का कथन पूरा हो गया फिर भी आकाश बोला नहीं। बार-बार पूछने पर उसने एक शब्द ही कहा—"आप सबके मिलने से ही यह संसार गतिशील है। न तो किसी के अकेले चलाने से यह चलेगा और न किसी अकेले के रूठ जाने से, सब लोग मिलकर रहेंगे तो ही खुशहाली रहेगी।"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

आकाश की यह बात मनुष्यों के लिए भी उतनी ही उपयोगी और सार्थक है। परस्पर सहयोग और सहकार से ही हमारी खुशहाली संभव है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

स्वयंसेवक गोपालकृष्ण गोखले

सन् १८८५, पूना के न्यू इंगलिश हाईस्कूल में समारोह के प्रमुख द्वार पर एक स्वयंसेवक को इसलिए नियुक्त किया गया कि वह आने वाले अतिथियों के निमंत्रण पत्र देखकर सभा-स्थल पर यथास्थान बिठा सके। उस समारोह के मुख्य अतिथि थे चीफ जस्टिस महादेव गोविंद रानाडे। जैसे ही विद्यालय के फाटक पर पहुँचे वैसे ही स्वयंसेवक ने अंदर जाने से रोक दिया और निमंत्रण पत्र की माँग की। ''बेटे! मेरे पास तो कोई निमंत्रण पत्र है नहीं''—रानाडे ने कहा। तब आप अंदर प्रवेश न कर सकेंगे। स्वयंसेवक का नम्रतापूर्ण उत्तर था। द्वार पर रानाडे को रुका देख स्वागत समिति के कई सदस्य आ गए और उन्हें अंदर मंच की ओर ले जाने का प्रयास करने लगे। पर स्वयंसेवक ने आगे बढ़कर कहा—''श्रीमान! मेरे कार्य में यदि स्वागत समिति के सदस्य ही रोड़ा अटकाएँगे, तो फिर मैं अपना कर्त्तव्य कैसे निभा सकूँगा? कोई भी अतिथि हो उसके पास निमंत्रण पत्र होना ही चाहिए। भेदभाव की नीति मुझसे नहीं बरती जाएगी।'' यही स्वयंसेवक आगे चलकर गोपाल कृष्ण गोखले के नाम से प्रसिद्ध हुए और देश की बड़ी सेवा की।

जब बच्चे को बाल्यकाल से ही अच्छे संस्कार मिलते हैं, तभी कर्त्तव्यनिष्ठा उसमें विकसित होती है, वही उसके व्यवहार में परिलक्षित होने लगती है।

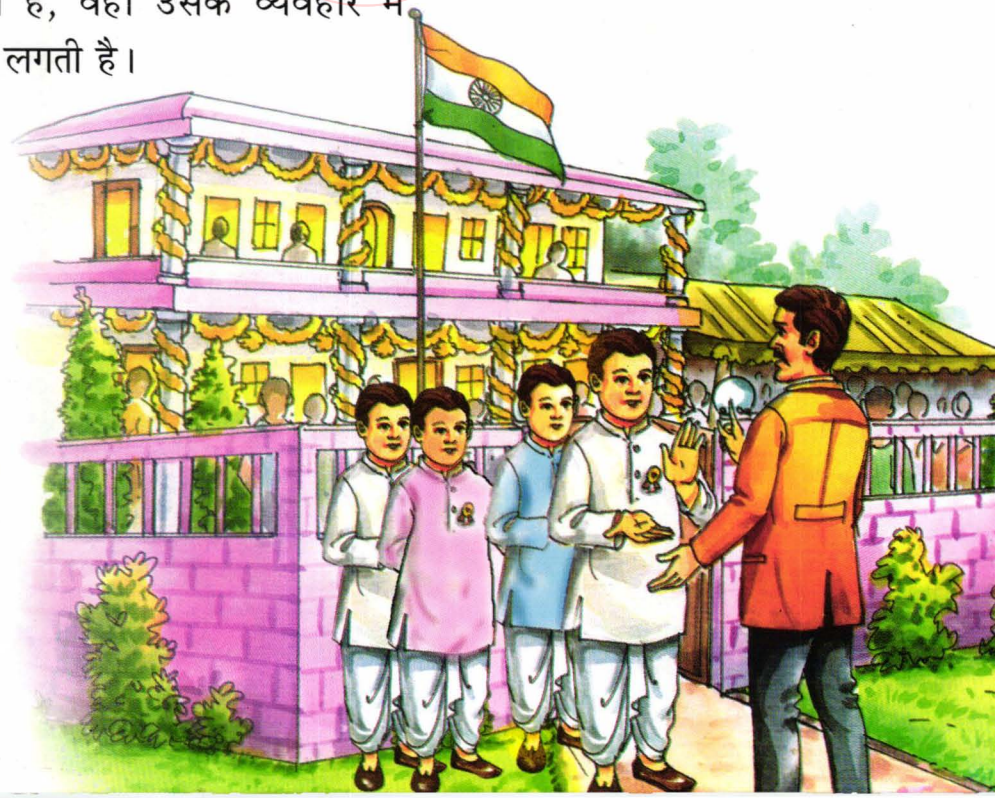

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

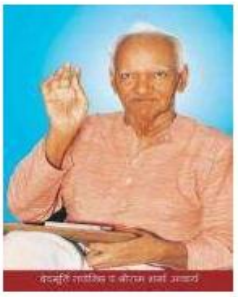

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org